14 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

मेरा बाबा कह सर्व खजानों को अपना बनाने का अनुभव

➢➢ मैं दिव्य फरिश्ता हूँ

➳_ ➳ दिव्य कर्तव्य करने के लिए

→ धरा धाम पर

→ अवतरित हुआ हूँ

◆ स्वयम भगवान मेरे

◆ श्रेष्ठ भाग्य की

◆ रेखाएं खींच रहे हैं

➢➢ मैं भाग्यवान आत्मा हूँ

➢➢ न सिर्फ भाग्यशाली हूँ

➢➢ पद्मापदम् भाग्यशाली हूँ

➳_ ➳ भाग्य विधाता बाबा

➳_ ➳ न केवल एक जन्म

➳_ ➳ बल्कि जन्म जन्म के लिए

→ मेरे श्रेष्ठ भाग्य की

◆ रेखाएं खींच रहे हैं

◆ स्वयम विधाता

◆ अविनाशी तकदीर की

◆ लकीर खींच रहे हैं

➳_ ➳ मैं आत्मा भोलेनाथ बाबा के

➳_ ➳ खुले भंडारों से

➳_ ➳ स्वयम को भरपूर कर रही हूँ

→ तन का भंडारा

→ मन का

→ धन का

→ राज्य का

→ प्रकृति दासी बनने का

→ भक्त बनाने का

◆ सभी भाग्य के भंडारों से

◆ मैं आत्मा संपन्न बन रही हूँ

➢➢ मैं आत्मा सभी बन्धनों से मुक्त हूँ

➳_ ➳ मैं दाता

➳_ ➳ विधाता

➳_ ➳ वरदाता बाप से

➳_ ➳ सर्व खजाने प्राप्त कर रही हूँ

→ मैं आत्मा बाबा शब्द की चाबी से

→ सर्व खजानों को अपना बना रही हूँ

→ मैं स्व दर्शन चक्र फिरा रही हूँ

→ स्व आत्मा का चिन्तन कर रही हूँ

→ स्व परिवर्तन के द्वारा

◆ सब खजाने प्राप्त कर रही हूँ

➳_ ➳ हर कर्म में मैं

→ बाप को आगे रख रही हूँ

◆ मैं आत्मा शिव वंशी हूँ

◆ शिव कुमार हूँ

◆ अब संगम युग पर

◆ मैं ब्रह्मा कुमार बन

◆ भाग्य बना रही हूँ

➳_ ➳ मैं कितनी भाग्यवान आत्मा हूँ

→ स्वयम विधाता ही

→ मेरे बन गये हैं

→ बाबा को अपना बना कर मैं

→ सर्व खजानों को प्राप्त कर रही हूँ

◆ भाग्य के इन अनमोल खजानों से

◆ हर पल खेल रही हूँ

◆ भाग्य विधाता की सन्तान

◆ मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ

◆ अधिकारी आत्मा हूँ